लॉक डाउन में दिखा इंसानी चेहरा

श्रुति मनवाल
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

देश जब कोरोना महामारी के गंभीर संकट से गुजर रहा है तो इस स्थिति में रोजगार, भुखमरी और पलायन सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। कोविड-19 की रोकथाम के लिए सरकार ने बहुत से कड़े कानून बनाए हैं। प्रत्येक व्यक्ति को घर पर रहने की सलाह दी गई है। लेकिन लॉक डाउन से हालात कुछ ऐसे बन गए कि हर इंसान अपनी जन्मभूमि लौटना चाहता है। मैं मार्च महीने में टिहरी से देहरादून गई थी। परन्तु कोरोना के बढ़ते प्रकोप के बाद सरकार ने पूरे देश में 21 दिन का लॉक डाउन लगा दिया। जिसके बाद मुझे भी देहरादून में ही रुकना पड़ा। इस दौरान ऐसी बहुत सी घटनाएं सामने आईं जिसने मुझे एक तरफ जहां इंसान और इंसानियत के अलग अलग चेहरे से रूबरू कराया, वहीं शहर और गांव की परिस्थिति और लोगों की सोंच से भी परिचित कराया।

विकट परिस्थिति में मुझे इंसानों के व्यवहार को करीब से देखने का मौका इसी लॉकडाउन में मिला। जब देहरादून में रहने के दौरान अपने मकान मालिक और आसपास के लोगों को घर की कामवाली से लेकर मज़दूर और माली के साथ अमानवीय व्यवहार करते देखा। उन्होंने कोरोना महामारी का प्रकोप ठीक होने तक उन्हें काम पर आने से मना तो कर दिया। लेकिन इस बात की ज़रा भी सुध नहीं ली कि इस संकट में वह किस प्रकार अपने परिवार का भरण पोषण करेंगे। परिणामस्वरूप मजबूर होकर ये लोग अपने अपने गांव के लिए निकल पड़े, परन्तु कोई वाहन ना होने के कारण उन्हें पैदल ही चलना पड़ा। कोई बिजनौर के लिए तो कोई हज़ार किमी दूर बिहार के लिए। यह दृश्य देख कर मन द्रवित होने लगा। दिल में बार बार यह सवाल उठने लगा कि संकट की इस घड़ी में जब इंसान को इंसान के काम आना चाहिए तो यह कैसा व्यव्हार है?

बहरहाल लगातार कोशिश करने के बाद आखिरकार मुझे अपने घर टिहरी जाने की अनुमति मिल गई। ई-पास के जरिए टैक्सी बुलवाकर घर के लिए निकल पड़ी। आते समय रास्ते में दिखे दृश्यों ने एक बार फिर दिल को झकझोड़ दिया। देहरादून के घंटाघर और आराघर के बीच एक शराब की दुकान पर उमड़ी भीड़ को देख कर लगा कि सरकार द्वारा लॉक डाउन को सफल बनाने की सभी नीतियां बेकार चली गईं। मन में फिर सवाल आने शुरू हुए कि आखिर यह कौन लोग हैं? खबर तो यही सुनती थी कि लॉकडाउन में लोगों के पास राशन खरीदने के पैसे नहीं हैं। पुलिस प्रशासन और स्वयंसेवी संस्थाओं के भरोसे लोगों को दो वक्त की रोटी मिल पा रही है। फिर हज़ारों की

संख्या में लाइन में खड़े लोगों के पास शराब खरीदने के पैसे कहाँ से आये? क्या इन पैसों से शराब खरीदने की जगह वह अपने बच्चों को अच्छा खाना नहीं खिला सकते थे? लॉक डाउन की अनदेखी कर सड़कों पर लोगों की इतनी बड़ी संख्या से क्या कोरोना फिर से संकट नहीं बन जायेगा?

गांव पहुंचने पर सबसे पहले मेरी थर्मल स्क्रीनिंग हुई। जिसमें मैं स्वस्थ्य पाई गई। इसके बाद मुझे गांव में प्रवेश करने की अनुमति मिल गई। जहाँ फिर मैंने कुछ दृश्य देखे। लेकिन इस बार यह दृश्य पिछले दृश्यों से बिलकुल भिन्न थे। गांव में न केवल शांति थी और लोग लॉक डाउन का गंभीरता से पालन कर रहे थे बल्कि मुसीबत के इस वक्त में एक दूसरे की मदद के लिए भी तैयार थे। जहां शहर की चकाचौंध ने लोगों को केमिकल युक्त भोजन खाने के लिए मजबूर कर दिया है, वहीं गांव में लोग जैविक खेती से उगाई बिल्कुल शुद्ध सब्जियों का सेवन कर रहे हैं।

मार्च से मई तक के दरम्यान अपनी इस यात्रा में मैने समाज के दो हिस्सों का अनुभव किया और महसूस किया कि कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से निपटने के लिए कौन किस स्तर तक तैयार है। इस महामारी से जहां सम्पूर्ण विश्व संकट के दौर से गुजर रहा है, वहीं कुछ हिस्से ऐसे भी हैं जहां लोग लापरवाही कर लॉक डाउन का उलंघन कर खुद भी और पूरे समाज को संकट में डाल रहें हैं, तो वहीं कुछ हिस्सों में इस बीमारी से निपटने के लिए लोग एक ज़िम्मेदार नागरिक की तरह अपने कर्तव्यों का पालन भी कर रहे हैं, फिर चाहे वह गांव हो या शहर।

(19 वर्षीय श्रुति चरखा की सबसे युवा लेखिकाओं में एक है। इस विकट परिस्थति में युवा की नज़रों से समाज की दो अलग अलग मनोदशाओं के चित्रण पर हम सभी को गंभीरता से सोंचने की आवश्यकता है)